श्री

लघुपूजासंग्रह

अनेक बाबत सहित.

प्रगटकर्ता

श्रा. भीमसिंह माणेक.

मुंबई

निर्णयसागर प्रेस.

संवत १९७० कार्तिक सुदि पंचमी

सने १९१३

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ पंडितश्रीदेवचंद्रजीकृत

॥ स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥

(पांखडी गाथा) ॥ ढाल पहेली ॥

चउत्तिसे अतिसय जुउ, व-
चनातिसय जुत्त॥ सो परमेसर
दी भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ सिंहासन बेठा जग भाण,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देखी ज्ञविक जन गुण मणि खा-
णं ॥ जे दीठे तुज निर्मल नाण,
लहीए परम महोदय ठाण ॥ कु-
सुमांजलि मेलो आदि जिणंदा,
तोरां चरणकमल सेवे चोसठ इंदा
॥ कु० ॥१॥ चोवीश वैरागी, चोवीश
सोज्ञागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥
एम कही प्रज्ञुना चरणे पूजा करीए॥

॥ गाथा ॥

॥ जो निय गुण पज्जव रम्यो,
तसु अनुज्ञव एगंत ॥ सुह पुग्गल
आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥श॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ढाल ॥

॥ जो निज आतम सुख आ-
णंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी ॥
जे परमेसर निज पद लीन, पूजो
प्रणमो जव्य अदीन ॥ कुसुमां-
जलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तो०
॥ कु० ॥ २ ॥ एम कही प्रज्ञुना
जानुए पूजा करीए ॥

॥ गाथा ॥

॥ निम्मल नाण पयासकर, नि-
म्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मो-
वएस कर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ॥

॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी नीशाणी, तसु भ-गते मुज मति ठहराणी ॥ कुसु-मांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ एम कही प्रभुना बे हाथे पूजा करीए ॥

॥ गाथा ॥

॥ जे सिद्धा सिद्धंति जे, सि-द्धंति अणंत ॥ जसु आलंबन ठ-विय मण, सो सेवो अरिहंत ॥४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ॥

॥ शिवसुख कारण जेह त्रि-
काले, समपरिणामे जगत निहाले
॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इं-
द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कु-
सुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥
तो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ एम कही प्र-
भुना खंभाए पूजा करीए ॥

॥ गाथा ॥

॥ समदीठी देस जय, साहु
साहुणी सार ॥ आचारिज उव-
झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ॥

॥ चउविह संघे जे मन धार्युं, मोक्ष तणुं कारण निरधार्युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रभुने मस्तके पूजा करीए ॥ इति पांखडी गाथा ॥

॥ वस्तु बंद ॥

॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग, कल्लाणकविहि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संघविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इगसत्तरि तिहंकर, ए- क समय विहरंति महीयल, च- वण समय इगवीस जिण, जम्म समय इगवीस ॥ नत्तिय नावे पू- जीया, करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

एक दिन अचिरा हुलरावती

॥ ए देशी ॥

॥ नव त्रीजे समकित गुण र- म्या, जिन नक्ति प्रमुख गुण प- रिणम्या ॥ तजी इंद्रिय सुख आ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शंसना, करी स्थानक वीशनी से-
बना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्र-
भावता, मन भावना एहवी भा-
वता ॥ सवि जीव करुं शासन रसी,
इसी भाव दया मन उल्लसी ॥ २॥
लही परिणाम एहवुं भलुं, निप-
जावी जिनपद निर्मलुं ॥ आयु-
बंध वचे एक भव करी, श्रद्धा सं-
वेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ त्यांथी
चवीय लहे नरभव उदार, भरते
तेम ऐरवतेज सार ॥ महाविदेहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विजये वर प्रधान, मध्य खंडे अ-
वतरे जिन निधान ॥ ४ ॥
॥ अथ सुपनानी ढाल त्रीजी ॥
॥ पुण्ये सुपनह देखे, मनमांहे
हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्ज्वल सुं-
दर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥
निर्भय केशरी सिंह, लक्ष्मी अ-
तिही अबीह ॥ अनुपम फूलनी
माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥२॥
तेजे तरणी अति दीपे, इंद्रध्वजा
जग पूरण जींपे ॥ पूरण कलश
पंडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अग्यारमे रयणायर, देखे माता गुण सायर ॥ बारमे भुवन विमान, तेरमे अनुपम रत्न निधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम ॥ हर्षी रायने भाषे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु बंद ॥

॥ पुण्य उदय पुण्य उदय, उपना जिननाह, माता तव रयणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

समे, देखी सुपन हरखंती जागीय ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो सोभागीय ॥ त्रि-भुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान ॥ इंद्रादिक जसु पाय न-मी, करशे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कंपीयो, देइ अवधि मन आणंदीयो ॥ नि-ज आतम निर्मल करण काज,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवजलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ नवअडवी पारग सहवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढी मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनंदकंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय सामो आवी तह, करी अंजलीय प्रणमीय मह ॥ मुखे नाखे ए क्षण आज सार, तिय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तुम सवेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुरुवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समछ, प्रगट्यो तस प्रणमी हुवो सनाथ ॥ एम जंपी शक्र स्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंना गीत गान, सुरलोक हुवो मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ पिता माता घरे उत्सव अशेष, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयमअर्थी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइ वधाइ थइ अतीव ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ श्रीशांति जिननो कलश कहीशुं प्रेम सागर पूर ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गाइए सुखकार ॥ नरखित्त मंरुण डुह विहंडण, नविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार ॥ दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥ निय अमर श्रमरी संग कुमरी, गावती गुणबंद ॥ जिन जननी पासे आवी पोहोती, गहगहती आणंद ॥ हे माय ! तें जिनराज जायो, शुचि वधायो रम्म ॥ अम जम्म निम्मल करण कारण, करीश सू-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ईकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि शोधन दीप दर्पण, वाय वींजण धार ॥ तिहां करीय कदली गेह जिनवर, जननी मज्जनकार ॥ वर राखडी जिनपाणि बांधी, दीए एम आशीष ॥ जुग कोडाकोडी चिरंजीवो, धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ एकवीशानी ॥

जगनायकजी, त्रिभुवन जन हितकार ए ॥ परमातमजी, चिदानंद घनसार ए ॥ ए देशी ॥

॥ जिणरयणीजी, दश दिशि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उज्ज्वलता धरे ॥ शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्याजी, जेणे अवसर माता घरे ॥ तेणे अवसरजी, इंद्रासन पण थरहरे ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ थरहरे आसन इंद्र चिंते, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिन जन्म उत्सव काल जाणी, अतिही आनंद उपन्यो ॥ निज सिद्धि संपत्ति हेतु जिनवर, जाणी नक्के उम्मह्यो ॥ विकसित वदन प्रमोद व-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धते, देव नायक गहगह्यो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ तव सुरपतिजी, घंटानाद क-
राव ए ॥ सुरलोकेजी, घोषण एह
देवराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी, जिनवर
जन्म हुउं अछे॥ तसु जगतेजी, सु-
रपति मंदरगिरि गछे ॥

॥ त्रुटक ॥

गछेति मंदर शिखर उपर, ज-
वन जीवन जिन तणो ॥ जिन ज-
न्म उत्सव करण कारण, आवजो
सवि सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त थाशे निर्मल, देवाधिदेव निहा-
लतां ॥ आपणां पातिक सर्व जाशे,
नाथ चरण पखालतां ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम सांभलीजी, सुरवर कोरी
बहु मली ॥ जिनवंदनजी, मंदरगि-
रि सामा चली ॥ सोहमपतिजी, जि-
न जननी घर आवीया ॥ जिन माता-
जी, वंदी स्वामी वधावीया ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ वधावीया जिन हर्ष बहुले,
धन्य हुं कृतपुण्य ए॥त्रैलोक्य नायक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देव दीठो, मुज समो कोण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन वर करी ॥ उत्संग तुमचे वलीय थापीश, आतमा पुएये नरी ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ सुर नायकजी, जिन निज करकमले ठव्या ॥ पंच रूपेजी, अतिशे महिमाए स्तव्या ॥ नाटक विधिजी, तव बत्रीश आगल वहे ॥ सुर कोरीजी, जिन दर्शनने उम्महे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ त्रुटक ॥

॥ सुर कोमाकोमी नाचती व-
ली, नाथ शुचि गुण गावती ॥ अ-
प्सरा कोमी हाथ जोमी, हाव जा-
व देखावती ॥ जयो जयो तुं जि-
नराज जगगुरु, एम दे आशीष ए
॥ अम्ह त्राण शरण आधार जीवन,
एक तुं जगदीश ए ॥ ४॥

॥ ढाल ॥

सुरगिरिवरजी, पांमुक वनमें
चिहुं दिशे ॥ गिरि शिल परजी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आ-
णीजी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या ॥ चौ-
सठेजी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ आवीया सुरपति सर्व नक्के,
कलश श्रेणी बनाव ए ॥ सिद्धार्थ
पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु
अणाव ए ॥ अच्चुअपति तिहां हु-
कम कीनो, देव कोडाकोडीने ॥
जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे
सुर कर जोडीने ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शांतिने कारणे इंद्र कलशा भरे ॥ ए देशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोमी हसी, उल्लसीने धसी क्षीरसागर दिशि ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अरु कलश करी सहस अठोतरा, छत्र चामर सिंहासण शुभतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमे भाषीया तेम

आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरीय कर कलश करी देवता, गावता भावता धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति एम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी-मिषे भक्तिजल सिंचता ॥ मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखी मन गहगही॥४॥

॥ वस्तु छंद ॥

हंहो देवा हंहो देवा अणाइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कालो, अदिठ पुवो तिलोय तारणो तिलोय बंधु, मिछत्त मोह विऊंसणो अणाइ तिण्हा विणासणो, देवा-हिदेवो दिठ बोहिय कामेहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ एम पन्नणंत वण नवण जोई-सरा, देव वेमाणिया नत्ति धम्मा-यरा ॥ केवि कप्पठिया केवि मित्ता-णुगा, केवि वर रमणि वयणेण अइ उन्नुगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ तह अच्चुय, तह अच्चुय इंद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आदेस ॥ कर जोमी सवि देवग-
ण, लेय कलश आदेश पामी-
य ॥ अद्भुत रूप सरूप जुअ,
कवण एह उत्संगे सामिय ॥ इंद्र
कहे जग तारणो, पारग अम पर-
मेस ॥ नायक दायक धम्म निहि,
करीए तसु अभिसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तीर्थकमलदल उदक भरीने,
पुष्करसागर आवे ॥
ए देशी ॥

॥ पूरण कलश शुचि उदकनी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धारा, जिनवर अंगे नामे ॥ आतम निर्मल भाव करंता, वधते शुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥

॥ गाहा ॥

॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणेई, करइ सुपसाउ ॥ तुम अंके महन्नाहो, पणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ २ ॥ ता सिक्किंदो पभणेई, साहमीवछलंमि बहु लाहो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ आणा एवं तेणं, गिण्हिहव्वो उक्कयव्वाज्रो ॥ ३ ॥ एम कही सर्व स्नात्रीया कलश ढाले, अने मुखथी नीचे प्रमाणे पाठ कहे ॥

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ सोहम सुरपति वृषज्ञ रूप करी, न्हवण करे प्रज्ञु अंग ॥ करीय विलेपण पुष्फमाल ठवी, वर आज्ञरण अज्ञंग ॥ तव सुरवर बहु जय जयरव करी, नाचे धरी आणंद ॥ मोक्ष मार्ग सारथपति पाम्यो, ज्ञांजशुं हवे ज्ञव फंद ॥४॥ कोडि बत्रीश सोवन उवारी, वा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जंते वर नादे ॥ सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनी, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी थापी एम पयंपे, अम नि-स्तरीया आज ॥ पुत्र तुमारो धणी हमारो, तारण तरण जहाज ॥५॥ मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर, करे जिन-भक्ति उदार ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्झर, कहेतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान क-ल्याणक, इहा चित्त मझार ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खरतरगछ जिन आणारंगी, राज-
सागर उवझाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद
सुपाठक, सुगुरु तणे सुपसाय ॥
देवचंद्र जिनभक्ते गायो, जन्म
महोत्सव बंद ॥ बोध बीज अंकूरो
उलस्यो, संघ सकल आनंद ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलावल ॥

॥ एम पूजा भक्ते करो, आत-
महित काज ॥ तजीय विभाव
निज भावमें, रमता शिवराज ॥
एम० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हुआ,
होशे जेह जिणंद ॥ संपय सीमं-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ एम० ॥ १ ॥ जन्ममहोत्सव एणी परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत ॥ एम० ॥ २ ॥ देवचंद्र जिन पूजना, करतां भवपार ॥ जिनपडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ एम० ॥ ४ ॥

समाप्त.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्रीदेवचंद्रजीकृत

॥ प्रथम निस्सहीपूर्वक श्रीदेरासर मध्ये आवी अंग शुद्ध करी, नवीन वस्त्र पहेरी, स्वनालतिलक करी, बाजोठनी स्थापना करी, ते उपर बाजोठ मांडी, स्नात्रपीठ उपर थालनी स्थापना करवी, ते उपर तंदुलनी ढगली करवी ॥ तेनी उपर रूपानाणुं तथा नालीयेर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरीने पछी स्नात्रीयाए पोताने हाथे मौलीसूत्र बांधवुं, तथा बीजा कलश प्रमुख स्थानके मौली बंधन करी, कलशने धूप दइ, दुध, दधि, घृत, जल तथा शर्करा, ए पंचामृ-तथी कलश भरी राखवा. पछी मुखकोश बांधी मूलनायकजी आ-गल आवी नमस्कार करी, अने धूपधाणुं हाथमां लइ धूप उखे-ववो ॥ ते समये मुखथी धूपाव-लीनी गाथा कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

असुरिंदसुरिंदाणं, किन्नर गंधव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चंद सूराणं ॥ विद्याहरा सुराणं,
सज्जोगा सिद्धाण सिद्धाणं ॥ १ ॥
मुनिय परमत्र्र विन्न, गियत्र वि-
विह तव सोसियंगाणं ॥ सिद्धि-
वहु निप्नरठं, ठियाणं जोगीसराणं
च ॥ २ ॥ जंपूयाय नयवउं, तित्र-
यरा राग रोस तम रहिया ॥ वि-
णय पणएण तेसिं, समुक्कुउं मे
इमे धूउं ॥ ३ ॥ तित्रंकर पक्रिमाणं
कंचण मणिरयण विद्दुममयाणं ॥
तिहुयण विन्नूसगाणं, सासय सुर
नर कयाणं च ॥ ४ ॥ सिद्धाण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरि पाठग, साहूणं ऊाण जोग निरयाणं ॥ सुयदेवय माइणं, समुद्धुर्ज मे इमे धूर्ज॥ ५ ॥

॥ ए गाथाउं कह्या पठी प्रथम अद्धतने धोइ तेउंने केशर तथा चंदन लगारुवां, तथा पुष्पोने पण जलथी शुद्ध करी राखवां, तदनंतर ते अद्धत तथा फूलनी कुसुमांजलि हाथमां लइ, उन्ना थइने "नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०" ॥ एम पाठ कहेवो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अने पछी बे श्लोक पठन करवा, ते आ प्रमाणेः—

श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्मलक्ष्म्याः, दुष्टारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पातघाति॥ संकेतं कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वोत्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिमगुरोर्वंचिता यैर्न दृष्टम् ॥१॥ अशेषन्नवनांतराश्रितसमाजखेदक्षमो, न चापि रमणीयतामतिशयीत तस्यापरः॥ प्रदेश इहमानतो निखिललोकसाधारणः, सुमेरुरिति ता-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पिनः स्नपनपीठभावं गतः ॥ २ ॥

॥ एम कह्या पछी स्नात्रपीठ सन्मुख कुसुमांजलि अर्पण करवी, तदनंतर स्नापनपीठ पखाली लूंछीने कुंकुमनो स्वस्तिक करवो, धूप उखेववो अने सर्व स्नात्रीयाउंना हाथने धूपावली आपवी, पछी कर्पूर लगाडवो, अने एक नवकार कहीने स्नात्रपीठ उपर प्रतिमाजीनी स्थापना करवी, ते प्रतिमा प्रायः पंचतीर्थिक, अर्थपरकरसंयुक्त स्थापवी, तेना मुख आगल अक्ष-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तोनी ढगली करवी, अने तेनी उपर पंचामृतनो एक कलश मूकवो, पछी हाथमां कुसुमांजलि लइने "मुक्तालंकारविकार०" ए आर्या भणी कुसुमांजलि अर्पण करीने, प्रतिमाजीनां निर्माल्य उतारी प्रक्षालन करवुं, पछी अंगलूहणांथी प्रमार्जीने धूप उखेववो, अने केशर, चंदन, कर्पूर तथा कस्तूरी घसी ते पवित्र भाजनमां भरीने ते भाजन प्रतिमाजी आगल धरवुं. वली कुसुमांजलि हा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थमां लइ उन्ना थइ " इह्वं णमो अरिहंताणं० ॥ नमोर्हत्सिद्धा० ॥" कहीने स्नात्रपूजानी पहेली पांखमी कहेवी, एम अनुक्रमे पांच पांखडी कही कुसुमांजलि पूर्ण करीने हाथमां चामर लइने तेने जगवंतनी उपर ढोलवो ॥ वस्तु ॥ " सयल जिनवर " थी मांमीने यावत् "वधाई वधाई थइ अतीव" सुधीनो पाठ कहेवो, ते पूर्ण थया पढी चैत्यवंदन करवुं. पढी शक्रस्तव कही जयवीयराय सुधी जणवुं.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पछी हाथ धोइ धूप कर्पूरादिक हाथने लगाडवां, त्यार केडे जे पूर्वे कलशोने धोइ धूप आपी कंठे मौ-ली सूत्र बांधी उपर स्वस्तिक करी तेउमां पंचामृत भरी, अक्षतोना ढगलाउ उपर धारण करी तेनी उपर अंगलूहणां ढांकी धूप उखेवी तेउमांना मात्र बेज कलशोने आ-सपास जलधारा दइने राख्या होय, पछी स्नात्रीयाना हाथमां स्वस्तिको करी सर्वे जणोए श्रेणिबद्ध उभा रहेवुं, अने प्रत्येक स्नात्रीयाए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खमासमण दइ, पंचांग नमस्कार
करवो, पछी प्रत्येक स्नात्रीयाए
पोताना बे हाथमां कलशो लेवा,
ते कलशधारक स्नात्रीयाए पोताना
बन्ने हाथने विषे रहेला कलशने
उत्तरासंग वस्त्र वडे ढांकी राखवा,
अने पोते उना छतां मुखथी "श्रीती-
र्थपतिनो कलश मज्जन०" इहांथी
मांडीने संपूर्ण पूजा जणवी, त्यार
पछी प्रतिमाजी उपर कलशो ढोली,
पखाल करी अंगलूहणांथी मज्जन
करी, केशर चंदनथी अर्च्चन करीने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फूल चढाववां. पछी थालमां स्वस्तिक करी बिंबनी स्थापना करवी अने धूप करवो. ते समये आ प्रमाणे पाठ जणवोः—

॥ अथ कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ इंद्र कलशनर ढाले श्रीजिन पर ॥ इंद्र कलश० ॥ हाथो हाथ अमरगण आनत, खीर विमल जलधारे ॥ श्रीजिन पर० ॥ १ ॥ सुरवनिता मली मंगल गावे, जावत जाव महारे ॥ श्रीजिन पर०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २ ॥ किन्नर अरु गंधर्व महोरग, निरत नीर नित्य सारे ॥ श्रीजिन पर० ॥ ३ ॥ देवदुंदुभि धुनि गर्जत अति, शिर पर सुजस विथारे ॥ श्रीजिन पर० ॥ ४ ॥ परमानंद जिनराज जगत्पद, जगजीवन हितकारे ॥ श्रीजिन पर० ॥ ५ ॥ इति कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ पछी रकेबीमां लूण पाणी लइने आरतिनी परे करवुं अने ते वखते मुख थकी गाथाउं कहेवी, ते आवी रीतेः—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ लूणउतारण गाथा ॥

॥ उवहि पडिन्नग्ग पसरं, पया-हिणं मुणिवइ करे ऊणं ॥ परुइ सलूण त्तणलाज्जियं च लूणं हु अवहंमी ॥ १ ॥ दोहा पिरकेविणु मुह जिणवरह,दीहर नयण सलूण॥ न्हावइ गुरु मच्छर न्नरिय, जलणी पइस्सइ लूण ॥२॥ लूणउतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिण देउ ॥ तरुयड सद्द करंति यह,विज्ञा विज्ञ जलेण॥३॥ गाथा ॥ जं जेणविज्ञ विज्ञइ, जलेण तं तह निहच्छइ स-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्सइं॥ जिणरूप मइरेणुव,फूटइ लूण तरुयरुस्स ॥४॥ ए गाथाउं कहीने लूणने अग्निशरण करवुं. पछी वली प्रथमनी पेठे लूण पाणी लइने मुखथी आवी रीते गाथाउं कहेवी:-

॥ दोहा ॥ सवं मुणिवइ जल-विजड,तं तह नमलइ पास ॥ अहव कयंतसुनिम्मलू,निग्गुण बुद्धि पया-स ॥ १॥ जल आणेविणु जलणिह पासह, नर विकयंजलि नाविहिं पासह ॥ तिन्नि पयाहिण दिंतिय पासह, जिम जिउ बुद्दइं नव दुह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पासह ॥ २ ॥ जल निम्मल करे कमलहि लेविणु, सुरवइ नावहि मुणिवइ सेविणु ॥ पन्नणइ जिणवर तुह पइ सरणं, नय तुटइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ३ ॥ ए गाथाउं कही लूण पाणी उतारीने जलशरण करवुं, त्यार पछी माला लइ उन्ना रहीने आ प्रमाणे गाथाउं कहेवीः—

॥ अथ पुष्पमालपूजा गाथा ॥

उन्नय पुजाय नत्तस्स, निय गाणे संठियं कुणं तस्स ॥ जिण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पासे न्नमिय जिणस्स, निय ठाणे संठियं तस्स (पाठांतरे) पिछ-तुह हुय वहे पमणं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पन्नावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति॥ सव्वन्नूण मपासे,जडस्स न्नमणं ण संकमणं ॥ २ ॥ अच्चंत डुक्करं विहु,हुअवह निवडेण कयं॥ आणा सव्वनूणं,न कया सुकयछ मूल मणिं ॥ ३ ॥ ए पाठ न्नणीने माला चढाववी, पछी हाथमां बूटां फूलो लेवां. ते वखत गाथाउं कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ वूटां फूलपूजा गाथा ॥

॥ उसरणो जिणपुरउं, परिमल मिलिया उक्किविह संगीया ॥ मुत्तामरेहिवो कुणउं, मरमल मिलिया उक्किविहसं ॥ १ ॥ उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मुहलालि जाव संचलिया ॥ तिब पवत्तण समए, तिय सेवी मुक्का कुसुम वुठी ॥ २ ॥ ए पाठ कहीने प्रज्ञुनी आगल फूलो उगालवां. हवे आज्ञरण तथा वस्त्रो लइने उन्ना रहतां गाथाउं कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ वस्त्राभरणपूजा ॥

॥ श्लोकः ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूलासिंहासनोपरि मितस्नपनाऽवसने ॥ दध्यक्षतैः कुसुमचंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥१॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालंकारवस्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्याहतः॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ २ ॥ एम कही

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आभरण तथा वस्त्रपूजा करवी ॥ पछी ज्ञानपूजा करे, तेनी गाथाउ ॥

॥ नमंति सामिति महीवनाहं, देवाय पूयं सु जहेव पुवं ॥ भत्तीय चित्तं मण दाम एहिं, मंदार पुप्फेह सवेह नाहं ॥ १ ॥ तहेव सद्धा-मण मुत्त एही, सुगंध पुप्फेह वरंस एहिं ॥ पूयं वंदंत नमंत नाणं, ना-णस्स लाभाय भवक्खयाय ॥ २ ॥ ए गाथाउ कहीने पुष्पोनी माला चढाववी, तथा रौप्यमुद्रा, सुवर्ण-मुद्रा, मणिरत्न अने वस्त्र एउंए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करी स्वशक्ति अनुसार ज्ञाननी पूजा करवी. पछी धूप करती वखते आ गाथा कहेवी ॥

॥ मीनकुरंगमुदारमसारं, सारसुगंधनिशाकरतारं ॥ तारमिलन्मलयोद्भविकारं, लोकगुरोर्दहधूपमुदारं ॥ १ ॥ एम कहीने धूप उखेववो. पछी मंगलदीपक करीने आ गाथाउं कहेवीः—

॥ अथ मंगलदीपकपूजा ॥

॥ कोसंबी संठियस्सवि, पयाहिणं कुणइ मनुत्तियपईवो ॥ जि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णसोम दंसणोदिण, य रूव तुह नाह मंगलपईवो ॥ १ ॥ नामी-जंतो सुरसुंदरीहिं, तुह नाह मंग-लपईवो ॥ कणयायलस्स निज्झिय, नाणुव्व पयाहिणं दिंतो ॥ २ ॥ मरगय सामल थालधरे विणु, कोमल सरलिहिं करिहिं करेविणु ॥ जे उत्तारइ मंगलपईवो, सो नर होइ तिलोयपईवो ॥ ३ ॥ ए गाथा कहीने मंगलप्रदीप करवो. पछी रकेबीमां कपूर धरी, आरतिमां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बत्ती सलगावीने मुख थकी आ गाथाउं कहेवीः—

॥ अथ आरति गाथा ॥

॥ जं मरगय मणि गडिय, विसाल थाल माणिक्क मंडिय पईवो ॥ एहवण यरकुरु खित्तं, नमउ जिण आरत्तियं तुम्हं ॥ १ ॥ आरत्तिअं नियहय, जिणस्स धूव किसणागरुहायं ॥ पासेसु नमउ निज्जिय, संगमय विन्निन्न दिठिव ॥ २ ॥ पसणेयवो नवंतर, समज्जियं कम्मरेणु संघायं ॥ आर-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्तिय मंगलग्गा, उछलंति सलिल-धारा ॥ ३ ॥ एवी रीते आरति करवी ॥ इति संक्षेपआरतिविधिः॥

॥ पछी उत्तरासंग करी चैत्य-वंदन करवुं, अने अष्ट प्रकारे पूजा करवी. कदाचित् अष्ट प्रकारे पूजा न कराय तो शेष फल फूल ने नैवेद्य जे होय, ते एमज चढावी देवां. पछी गुणगीत करवां, जय जय शब्द उच्चारवा, स्वामीवा-त्सल्य करवुं तथा यथाशक्ति दान देवुं ॥इति श्रीस्नात्रपूजाविधिः समा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत

नवपदपूजा प्रारंभः

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्पाम्हिहेरासणसंठियाणं ॥ स-
देसणाणं दियसञ्जणाणं, नमो
नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधा-
नाय नव्यात्मने भास्वताय ॥ थया
जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा
सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥
कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे,
भला भव्य नवपदध्यानेन तेणे ॥
करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सदा वासीयो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिंके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीए देशना जव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्म-पुत्ता ॥ ४ ॥ कस्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां, जवोपग्रही चार जे ठे विलग्गां ॥ जगत् पंच कह्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्कामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, निज वीरज वरु वीरो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञानत्नासन, सर्व त्नाव प्रकाशता ॥ निज शुद्ध श्रद्धा आत्मत्नावे, चरणथिरता वासता ॥ जिननाम कर्मप्रत्नाव अतिशय, प्रातिहारज शोत्नता ॥ जगजंतु करुणावंत त्नगवंत, त्नविकजनने क्षोत्नता ॥ २॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी॥

॥ त्रीजे त्नव वरस्थानक तप करी, जेणे बांध्युं जिननाम ॥ चो-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सि-द्धचक्रपद वंदो, जेम चिरकाले नंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवालुं ॥ ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टालुं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुं नाण समग्ग उप्पन्न, भोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दीए जनने, ते नमीए जिननाणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक सह-वाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमीए उत्साह रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पांत्रीश गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमीए प्राणी रे ॥ न० ॥ सि०॥५॥

॥ ढाल ॥

॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ १ ॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइ रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥ वी० ॥ २ ॥ इति प्रथम अरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सिद्धाणमाणंसुरमालयाणं ॥
॥ नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करी आठ कर्मक्षये पार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाम्या, जराजन्ममरणादि नय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १ ॥ त्रिनागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जात वर्णादि लेषा॥ सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्ति-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऩूपो जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ जेह
ऩूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति
व्यक्तिपणे करी॥स्वद्रव्यक्षेत्र स्वका-
लन्नावे, गुण अनंता आदरी ॥सुख-
न्नावगुणपर्याय परिणति, सिद्धसाध-
न पर न्नणी ॥ मुनिराज मानसहंस
समवरु, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥
॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी॥
॥ समयपएसंतर अणफरसी,
चरम तिन्नाग विशेष ॥ अवगाहन
लही जे शिव पोहोता, सिद्ध नमो
ते अशेष रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूर्व प्रयोग ने गतिपरिणामे, बंधन
छेद असंग ॥ समय एक ऊर्ध्व
गति जेह्नी, ते सिद्ध प्रणमो रंग
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल
सिद्धशिलानी उपरे, जोयण एक
लोगंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति
जेह्नी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥
ज० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न
शके कही परगुण, प्राकृत तेम गुण
जास ॥ उपमा विण नाणी जव-
मांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥
ज० ॥ सि० ॥ ए ॥ ज्योतिशुं ज्योति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंशणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्ध गुणखाणी रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय सिद्धपदपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ तृतीय आचार्यपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सूरीणडुरीकयकुग्गहाणं ॥
॥ नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्व-ताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्रा-ज्यभाजा ॥ षट्वर्गवर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सा-वधाना ॥ १ ॥ भविप्राणीने देशना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधारदि-ग्दंतिकल्पा, जगे ते चिरं जीवजो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामो जी ॥ चिदानंद रस स्वादता, परभावे निःकामो जी ॥१॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साध-नाव्यापारथी ॥ भविजीव बोधक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तत्त्वशोधक, सयल गुणसंपत्ति धरा ॥ संवरसमाधि गतउपाधि, डुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥पूजा॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ पंच आचार जे सुधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमीए तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छ॰ त्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमीए, अकलुष अमल अमाय रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीए सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गछ थंन आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अछमीए जिन सूरज केवल, चंदे जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रकटन पटु ते, आचारज चिरं जीवो रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महा मंत्र शुभ ध्यानी रे॥ पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति तृतीय आचार्यपदपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्यायपद-
पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराणं ॥
॥ नमो नमो वायगकुंजराणं ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

नहीं सूरि पण सूरिगणने स-
हाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोह-
माया ॥ वली द्वादशांगादि सू-
त्रार्थदाने, जिके सावधाना निरु-
द्धाभिमाने ॥ १ ॥ धरे पंचने वर्ग
वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोछे-
दने तुल्य सिंघा ॥ गुणी गछसं-
धारणे स्थंभभूता, उपाध्याय ते
वंदीए चित्प्रभूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव म-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

द्दव जुत्ता जी ॥ सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ता जी ॥ १ ॥ उ-लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्या-द्वादवादे तत्त्ववादक, आत्म पर-विज्ञजनकरा ॥ जवजीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ द्वादश अंग सिज्जाय करे जे, पारग धारग तास ॥ सूत्र अर्थ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दान विभागे, आचारज उवझाय ॥ नव त्रीजे जे लहे शिवसंपद्, नमीए ते सुपसाय रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाई जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवझाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारज पद योग ॥ जे उवझाय सदा ते नमतां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नावे नवनय सोग रे ॥ न० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बावनाचंदन रस समवयणे, अहित ताप सवि टाले ॥ ते उवझाय नमीजे जे वली, जिनशासन अजुवाले रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥

॥ तपसझाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ उपाध्याय-पदपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ पंचम मुनिपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥साहूण संसाहिअ संजमाणं॥
॥ नमो नमो सुद्दयादमाणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरिवायग ग-णिनी, करुं वर्णना तेहनी शी मु-णिनी ॥ समेता सदा पंचसमिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं कामभोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्रंथि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुद्धाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, निःकामी निःसंगी जी ॥ भवदव-ताप शमावता, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव बीपे पर जणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित जणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी॥

जेम तरुफूले जमरो बेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लेइ रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥ जन० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इंद्रियने जे नित्य जीपे, षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदुं तेह दयाल रे ॥ जन०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमीए जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकूरा रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमीए, देश काल अनुमाने रे॥ न०॥ सि०॥ २५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ॥

॥ अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति पंचम मुनिपद-पूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स ॥
॥नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ विपर्यास हठवासनारूप मि-
थ्या, टले जे अनादि अहे जेम पथ्या
॥ जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं
कहीए दर्शनं तेह परमं निधानं
॥१॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूपं,
चरित्रं विचित्रं नवारण्यकूपं ॥
प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे,
तिहां आपरूपे सदा आप जोवे॥२॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व
प्रतीत स्वरूपो जी ॥ जसु निरधार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल परईहा टले ॥ निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करणरुचिता उछले ॥ बहुमान परिणति वस्तुतत्त्वे, अहव तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्व करणी, तत्त्वता संपत्ति गणे ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाम रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २६ ॥
मलउपशम क्षय उपशमक्षयथी,
जे होय त्रिविध अनंग ॥ सम्य-
ग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे
दृढरंग रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २७ ॥
पंच वार उपशमिय लहीजे, क्षय-
उपशमिय असंख ॥ एक वार
क्षायिक ते समकित, दर्शन नमीए
असंख रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २८ ॥
जे विण नाण प्रमाण न होवे,
चारित्रतरु नवि फलीयो ॥ सुख
निर्वाण न जे विण लहीए, सम-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कितदर्शन बलीयो रे॥ ज०॥ सि० ॥ २ए ॥ सडसठ बोले जे अलं-करीयो, ज्ञानचारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित्य प्रणमुं, शिव-पंथनुं अनुकूल रे ॥ज०॥सि०॥३०॥

॥ ढाल ॥

॥ शम संवेगादिक गुणा, क्षय-उपशम जे आवे रे ॥ दर्शन ते-हिज आतमा, शुं होय नाम ध-रावे रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा समाप्ता ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ सप्तम सम्यग्ज्ञानपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स ॥
॥ नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथा वरण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणीए वस्तु षट् द्रव्यभावा, न हुये वितङ्गा (वाद)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निजेछा स्वभावा ॥ १ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ भव्य नमो गुणज्ञानने, स्व-पर प्रकाशक भावे जी ॥ परजय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥१॥ उलालो ॥ जे मुख्य परि-णति सकलज्ञायक, बोध भावविलछना ॥ मतिआदि पंच प्रकार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निर्मल, सिद्ध साधन लब्बना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥श॥

॥ पूजा ॥ढाल॥ श्रीपालना रासनी॥

॥ भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहीए, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, श्रीसिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नीए शिवसुख चाख्युं रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहीए ॥ तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, ते विण कहो केम रहीए रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पंच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वली जेम रवि शशि मेह रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेह ज्ञान मुज शुद्ध रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षय-उपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहिज आतमा, ज्ञानअबोधता जाय रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम चारित्रपद-पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥आराहिअखंडीअ सक्किअस्स॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥णमो णमो संजमवीरिअस्स॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली ज्ञानफल चरण धरीए
सुरंगे, निराशंसता द्वाररोधप्रसंगे
॥ भवांभोधिसंतारणे यान तुल्यं,
धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥१॥
होये जास महीमा थकी रंक राजा,
वली द्वादशांगी भणी होय ताजा
॥ वली पापरूपोपि निःपाप थाय,
थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥२॥

॥ ढाल उलालानी देशी ॥

॥ चारित्रगुण वली वली नमो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररम-
णीयपणुं टले, सकल सिद्ध अनु-
कूलो जी ॥ १ ॥ जलालो ॥ प्रति-
कूल आश्रवत्याग संयम, तत्त्व-
थिरता दममयी ॥ शुचि परम
खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उप-
चई ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे,
यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय
अकलुष अमल उज्ज्वल, काम-
कश्मलचूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल श्रीपालना रासनी ॥

॥ देशविरति ने सरवविरति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जे, गृही यतिने अभिराम ॥ ते
चारित्र जगत् जयवंतुं, कीजे तास
प्रणाम रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३६ ॥
तृण परे जे षट्‌ खंरू सुख छंरूी,
चक्रवर्त्ती पण वरीयो ॥ ते चारित्र
अक्षय सुख कारण, ते में मन-
मांहे धरीयो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
॥ ३७ ॥ हुआ रांक पण जे आ-
दरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरण
शरण चरण ते वंडुं, पूर्युं ज्ञान आ-
नंदे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३७ ॥ बार
मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अतिक्रमीए ॥ शुक्ल शुक्ल अभि-
जात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमीए
रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३ए ॥ चय ते
आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे
तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते भाख्युं,
ते वंदुं गुणगेह रे ॥न०॥सि०॥४०॥

॥ ढाल ॥

जाण चारित्र ते आतमा, निज
स्वभावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध
अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो
रे॥ वी० ॥ ए ॥ इत्यष्टम चारित्र-
पदपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ नवम तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स ॥
॥ नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इयनवपयसिद्धं, लद्धिविज्जासमिद्धं ॥ पयडियसुरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥ तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचितपणे बांधीयां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर भुनेदे, क्षमायुक्त निर्हेतु भुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होये जास महीमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेते ॥ ३ ॥ इस्या नव पद ध्याननें जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानविमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नवमे नव शिव जावे, देव नरनव पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्रप्रभावे, सवि दुरित समावे, विश्वजयकार पावे ५

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ इहारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी ॥ आतम सत्ता एकता, परपरिणति उछेदे जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ उलालो ॥ उछेद कर्म अ-
नादिसंतति, जेह सिरूपणुं वरे ॥
योगसंगे आहार टाली, नाव अ-
क्रियता करे ॥ अंतर मुहूरत तत्त्व
साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज
आत्मसत्ता प्रगटनावे, करो तप गुण
आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम नवपद गुणमंमलं, चउ
निक्षेप प्रमाणे जी ॥ सात नये जे
आदरे, सम्यग्ज्ञानने जाणे जी ॥
॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्झरसेती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए ॥ तसु करण ईहा तत्त्व रमणे, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ एम शु-द्धसत्ता नव्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥४॥

॥ कलश ॥

इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावलि ॥ सवि लद्धि विद्या सिद्धिमंदर, नविक पूजो मनरली ॥उवझायवर श्रीराजसागर ज्ञानधर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचंद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुचरण सेवक, देवचंद सुशोभता ॥१

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते नवमुक्ति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु कंद रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाये, क्षमा सहित जे करतां ॥ ते तप नमीए जेह दीपावे, जिनशासन उजमंतां रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महा सिद्धि नव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निधि प्रगटे, नमीए ते तप नावे रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोटुं सुर नरवर, संपत्ति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंडुं, सम मकरंद अमूल रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्व मंगलमां पहेलुं मंगल, वरणवीए जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहुं काल नमीजे, वर सहाय शिवपंथे रे ॥ न०॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउं तन्मय श्रीपाल ॥ सुजशविलासे चोथे खंडे, एह अ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्यारमी ढाल रे ॥ ज०॥ सि० ॥४६॥

॥ ढाल ॥

॥ इछारोधे संवरी, परिणति समतायोगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्त्ते निज गुण जोगे रे ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावे थिर होजो, परजावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्टक सकल समृद्धिनी, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तेम नव पद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे॥ एह तणे अवलंबने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंभे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवम तपःपदपूजा समाप्ता ॥ए॥

॥ अथ काव्यं ॥ द्रुतविलं-बितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलज्ञानभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं ॥ जिन-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वरं बहुमानजलौघनं, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य प्रत्येक पूजा दीठ कहेवुं.

॥ स्नात्र करतां जगगुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलशनी रे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशिष् भावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ नवपदकाव्यानि प्रारभ्यन्ते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीअरिहंतपद-काव्यम् ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ नियंतरंगारिगणे सुनाणे,
सप्पाडिहेराइ सयप्पहाणे ॥
संदेहसंदोहरयं हरंतो, झाएह
निच्चंपि जिणे रहंतो ॥ १ ॥

॥ श्रीसिद्धपदकाव्यम् ॥

॥ दुठ्ठकम्मावरण प्पमुक्के,
अनंतनाणाइ सीरीचउक्के ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

समग्गलोगग्ग पयन्नसिद्धे, झा-
एह निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥

॥ श्रीआचार्यपदकाव्यम् ॥

॥ सुतन्नसंवेगमयं सुएणं,
संनीरखीरामय विसुएणं ॥ पी-
नंति जे ते उवज्झायराए, झाएह
निच्चंपि कयप्पसाए ॥ ३ ॥

॥ श्रीउपाध्यायपदकाव्यम् ॥

॥ ननं सुहं नहि पीया न
माया, जे दंति जिवान्हिसूरी-
सपाया ॥ तम्हाहु ते चेव सया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भजेह, जं मुक्ख मुक्खाइं लहु लहेह ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपदकाव्यम् ॥

खंतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय संते गुणजोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, झाएह निच्चं मुणिरायपाए ॥ ५ ॥

॥ श्रीसम्यग्दर्शनपदकाव्यम् ॥

॥ जं दवछिक्कायेसु सद्दहाणं, तं दंसणं सवगुणप्पहाणं ॥ कुग्गहि वाही उवयंति जेणं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जहा विधेण रसायणेणं ॥ ६ ॥

॥ श्रीसम्यग्ज्ञानपदकाव्यम् ॥

नाणं पहाणं नयचक्कसिद्धं, ततवबोहीक मयं पसिद्धं ॥ धरेह चित्तावसए फुरंतं, माणिक्कदिवंवतमो हरंतं ॥ ७ ॥

॥ श्रीचारित्रपदकाव्यम् ॥

॥ सुसंवरं मोहनिरोधसारं, पंचप्पयारं विगमाइयारं ॥ मूलोत्तराणेगगुणं पवित्तं, पालेह निच्चंपिहु सच्चरित्तं ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीतपःपदकाव्यम् ॥

॥ बज्झं तहा ब्भिंतरभेयमेय,
कयाय दुब्भेय कुकम्म भेयं ॥
दुक्खक्खयठे कयपावनासं, तवे-
णदाहागमयं निरासं ॥ ९ ॥
इति नवपदकाव्यानि सं० ॥

समाप्त.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्रीदेवविजयजीकृत ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम न्हवणपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अजर अमर निकलंक जे, अगम्य रूप अनंत ॥ अलख अगोचर नित्य नमुं, परम प्रभुतावंत ॥ १ ॥ श्री संभवजिन गुणनिधि, त्रिभुवन जन हितकार ॥ तेहना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पद प्रणमी करी, कहीशुं अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ प्रथम न्हवणपूजा करो, बीजी चंदन सार ॥ त्रीजी कुसुम वली धूपनी, पंचम दीप मनोहार ॥ ३ ॥ अक्षत फल नैवेद्यनी, पूजा अतिहि उदार ॥ जे न्नवियण नित नित करे, ते पामे न्नवपार ॥ ४ ॥ रतन जडित कलशे करी, न्हवण करो जिनन्नूप ॥ पातक पंक पखालतां, प्रगटे आत्मस्वरूप ॥ ५ ॥ द्रव्य न्नाव दोय पूजना, कारण कार्य संबंध ॥ न्ना-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वस्तव पुष्टि नणी, रचना द्रव्य प्रबंध ॥ ६ ॥ शुन्न सिंहासन मांकीने, प्रन्नु पधरावो नक्त ॥ पंच शब्द वाजित्रशुं, पूजा करीए व्यक्त ॥७॥

॥ ढाल पहेली ॥ अने हांरे जिनमंदिर रलियामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे न्हवण करो जिनराजने रे, ए तो शुद्धालंबन देव ॥ परमातम परमेसरू रे, जसु सुर नर सारे सेव ॥ न्ह० ॥ १ ॥ अ० ॥ मागध तीर्थ प्रन्नासना रे, सुरनदी सिंधुनां लेव ॥ वरदाम क्षीरसमु-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऽनां रे, नीरे न्हवे जेम देव ॥ न्ह० ॥ २ ॥ अ० ॥ तेम नवि नावे तीर्थोदके रे, वासो वास सुवास ॥ औषधिउं पण नेली करो रे, अनेक सुगंधित खास ॥ न्ह० ॥ ३ ॥ अ० ॥ काल अनादि मल टालवा रे, नालवा आतम रूप ॥ जलपूजा युक्ते करी रे, पूजो श्री जिनभूप ॥ न्ह० ॥ ४ ॥ अ० ॥ विप्रवधू जलपूजथी रे, जेम पामी सुख सार ॥ तेम तमे देवाधिदेवने रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्चीं लहो नवपार ॥ न्ह० ॥ ५ ॥
॥ अथ काव्यं ॥ विमलकेवलदर्श-
नसंयुतं, सकलजंतुमहोदयकारणं॥
स्वगुणशुद्धिकृते स्नपयाम्यहं, जिन-
वरं नवरंगमयांनसा ॥ १ ॥ इति
प्रथम जलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चंदन-
पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजी चंदन तणी, पूजा
करो मनोहार ॥ मिथ्या ताप अना-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिनो, टालो सर्व प्रकार ॥ १ ॥ पुद्गल परिचय करी घणो, प्राणी थयो दुर्वास ॥ सुगंध द्रव्य जिन-पूजने, करो निज शुद्ध सुवास ॥२॥

॥ ढाल बीजी ॥ मनथी मरणां, परनारीसंग न करणां ॥ ए देशी ॥

॥ भवि जिन पूजो, दुनियामां देव न दूजो ॥ जे अरिहा पूजे, तस भवनां पातक धूजे ॥ भ० ॥१॥ प्रभुपूजा बहु गुण भरीरे, कीजे मनने रंग ॥ मन वच काया थिर करी रे, अरचो अरिहा अंग ॥ भ० ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केशर चंदन घसी घणुं रे, मांहे भेली घनसार ॥ रत्नकचोलीमांहे धरी रे, प्रभुपद चर्चो सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ भवदव ताप शमाववा रे, तरवा भवजल तीर ॥ आतम स्वरूप निहालवा रे, रुडो जगगुरु धीर ॥ भ० ॥ ४ ॥ पद जानु कर अंश शिरे रे, भाल गले वली सार ॥ हृदय उदर प्रभुने सदा रे, तिलक करो मन प्यार ॥ भ० ॥ ५ ॥ एणिविध जिनपद पूजना रे, करतां पाप पलाय ॥ जेम जयसुर ने शुभ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मति रे, पाम्या अविचल ठाय ॥ न० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ जगदुपाधिचयाद्रहितं हितं, सहजतत्त्वकृते गुणमंदिरं ॥ विनयदर्शनकेशरचंदनै –रमलहृन्मलहृज्जिनमर्च्चये ॥ १ ॥ इति द्वितीय चंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय कुसुमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी कुसुम तणी हवे, पूजा करो सद्भाव ॥ जेम दुष्कृत दूरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टले, प्रगटे आत्मस्वभाव ॥ १ ॥
जे जन षट् ऋतु फूलशुं, जिन पूजे
त्रण काल ॥ सुर नर शिवसुख
संपदा, पामे ते सुरसाल ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ साहेल-
डीयांनी ॥ देशी ॥

॥ कुसुमपूजा भवि तुमे करो ॥
साहेलडीयां ॥ आणी विविध
प्रकार ॥ गुण वेलडीयां ॥ जाइ
जूई केतकी ॥ सा० ॥ दमणो मरुउ
सार ॥ गु० ॥ १ ॥ मोघरो चंपक
मालती ॥ सा० ॥ पाडल पद्म ने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वेल ॥ गु० ॥ बोलसिरी जासूलशुं
॥ सा० ॥ पूजो मनने गेल ॥ गु०
॥ २ ॥ नाग गुलाब सेवंतरी ॥ सा०
॥ चंपेली मचकुंद ॥ गु० ॥ सदा
सोहागण दाउदी ॥ सा० ॥ प्रियंगु
पुन्नागनां वृंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ बकुल
कोरंट अंकोलथी ॥ सा० ॥ केवडो
ने सहकार ॥ गु० ॥ कुंदादिक
पमुहा घणे ॥ सा० ॥ पुष्प तणे
विस्तार ॥ गु० ॥ ४ ॥ पूजे जे भवि
भावशुं ॥ सा० ॥ श्री जिन केरा
पाय ॥ गु० ॥ वणिकसुता लीला-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वती ॥ सा० ॥ जिम लहे शिवपुर ठाय ॥ गु० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सुकरुणासुनृतार्जवमार्दवैः, प्रशमशौचशमादिसुमैर्जनाः ॥ परमपूज्यपदस्थितमर्चितं, परमुदारगुणं जिनं ॥ ॥ १ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्चा धूप तणी करो, चोथी हर्ष अमंद ॥ कर्मेंधन दाहन भणी, पूजो श्री जिनचंद ॥ १ ॥ सुविधि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धूप सुगंधशुं, जे पूजे जिनराय ॥ सुर नर किन्नर ते सवि, पूजे तेहना पाय ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सामरी सुरत पर मेरो दिन अटक्यो ॥ ए देशी ॥

॥ अरिहा आगे धूप करीने, नरभव लाहो लीजे री ॥ अगर चंदन कस्तूरी संयुक्त, कुंदरु मांहे धरीजे री ॥ अरि० ॥ १ ॥ चूरण शुद्ध दशांग अनोपम, तुरक्क अंबर भावीजे री ॥ रत्नजडित धूपधाणामांहे, शुभ घनसार ठवीजे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

री ॥ अरि० ॥ २ ॥ पवित्र थइ जिनमंदिर जइने, आशय शुद्ध करीजे री ॥ धूप प्रगट वामांगे धरतां, नव नव पाप हरीजे री ॥ अरि० ॥ ३ ॥ समतारस सागर गुण आगर, परमातम जिन पूरा री ॥ चिदानंदघन चिन्मय मूरति, झगमग ज्योति सनूरा री ॥ अरि० ॥ ४ ॥ एहवा प्रभुने धूप करंतां, अविचल सुखमां लहीए री ॥ इह नव परनव संपत्ति पामे, जेम विनयंधर कहीए री ॥ अरि० ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काव्यं ॥ अशुभपुद्गलसंचयवारणं, समसुगंधकरं तपधूपनं ॥ भगवता सुपुरोहितकर्मणां, जयवतो यवतोऽक्षयसंपदा ॥ १ ॥ इति चतुर्थ धूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपक-पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय धन जे निज तणु, तिरोभाव छे तेह ॥ प्रभुमुख द्रव्य दीपक धरी, आविरभाव करेह ॥ १ ॥ अग्निभव दीपक ए प्रभु,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूजी मागो देव ॥ अज्ञान तिमिर
जे अनादिनुं, टालो देवाधिदेव ॥२॥
॥ढाल पांचमी॥ झुमखडानी देशी॥

॥ नावदीपक प्रज्ञु आगले,
द्रव्यदीपक उत्साहे ॥ जिनेसर
पूजीए ॥ प्रगट करी परमातमा,
रूप नावो मनमांहे ॥ जि० ॥ १ ॥
धूम कषाय न जेहमां, न डीपे
पतंगने हेज ॥ जि० ॥ चरण चित्रा-
मण नवि चले, सर्व तेजनुं तेज
॥ जि० ॥ २ ॥ अधन करे जे
आधारने, समीर तणे नहीं गम्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ जि० ॥ चंचल नाव जे नवि लहे, नित्य रहे वली रम्य ॥ जि० ॥ ३ ॥ तैल प्रक्षेप जिहां नहीं, शुद्ध दशा नहीं दाह ॥ जि० ॥ अपर दीपक ए अरचतां, प्रगटे प्रशम प्रवाह ॥ जि० ॥ ४ ॥ जेम जिनमती ने धनसिरि, दीप पूज-नथी दोय ॥ जि० ॥ अमरगति सुख अनुन्नवी, शिवपुर पोहोती सोय ॥ जि० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ बहु-लमोहतमिस्त्रनिवारकं, स्वपरवस्तु-विकासनमात्मनः ॥ विमलबोध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुदीपकमादधे, भुवनपावनपारग-
ताग्रतः ॥ १ ॥ इति पंचम दीपक-
पूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ समकितने अजुआलवा, उत्तम एह उपाय ॥ पूजाथी तुमे प्रीछजो, मन वंछित सुख थाय ॥ १ ॥ अक्षत शुद्ध अखंडशुं, जे पूजे जिनचंद ॥ लहे अखंडित तेह नर, अक्षय सुख आणंद ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल छठी ॥ धर्मजिणंद दयालजी, धर्म तणो दाता ॥ ए देशी ॥

॥ अक्षतपूजा भवि कीजे जी, अक्षत फल दाता ॥ शालि गोधूम पण लीजे जी ॥ अ० ॥ प्रभु सन्-मुख स्वस्तिक कीजे जी ॥ अ० ॥ मुक्ताफल वीचमे दीजे जी ॥ ॥ अ० ॥१॥ एहवा उज्ज्वल अक्षत वासी जी ॥ अ० ॥ शुभ तंदुल वासे उल्लासी जी ॥ अ० ॥ चूरक चउगति चित्त चोखे जी ॥ अ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरी अक्षय सुख लह्यो जोखे जी ॥ अ० ॥ २ ॥ पुनरावर्त्त हरवा हाथे जी ॥ अ० ॥ नंदावर्त्त करो रंग साथे जी ॥ अ० ॥ कर जोरुी जिनमुख रहीने जी ॥ अ० ॥ एम आखो शिव दीयो वहीने जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगनायक जगगुरु जेता जी ॥ अ० ॥ जगबंधु अमल विभु नेता जी ॥ अ० ॥ ब्रह्मा ईश्वर वरुत्तागी जी ॥ अ० ॥ योगीश्वर विदित वैरागी जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ एहवा देवाधिदेवने पूजे जी ॥ अ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवनवनां पातक धूजे जी ॥ अ० ॥
जेम कीरयुगल नवपार जी ॥ अ० ॥
लहे अक्षत पूज प्रकार जी ॥ अ० ॥
॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सकलमंगलसंन-
वकारणं, परममक्षतनावकृते जिनं
॥ सुपरिणाममयैरहमक्षतैः, पर-
मया रमया युतमर्च्चये ॥ इति षष्ठा-
क्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम फल-
पूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीकार उत्तम वृक्षनां, फल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेइ नर नार ॥ जिनवर आगे जे धरे, सफलो तस अवतार ॥ १ ॥ फलपूजानां फल थकी, कोकि होय कल्याण ॥ अमर वधू उलट धरी, तस धरे चित्तमां ध्यान ॥२॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥ बिंद-लीनी देशी ॥

॥ फलपूजा करो फलकामी, अजिनव प्रभु पुएये पामी हो ॥ प्राणी जिन पूजो ॥ श्रीफल अखोड बदाम, सीताफल दाकिम नाम हो ॥ प्रा० ॥ १ ॥ जमरुख तरबुज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केलां, निमजां कोहलां करो नेलां हो ॥ प्रा० ॥ पीस्तां फनस नारंग, पूंगी चूअफल घणुं चंग हो ॥ प्रा० ॥ २ ॥ खरबूज द्राख अंजीर, अन्नास रायण जंबीर हो ॥ प्रा० ॥ मिष्ट लींबु ने अंगुर, शिंगोडां टेटी बीजपूर हो ॥प्रा०॥ ॥ ३ ॥ एम जे जे विषय लहंत, ते ते जिनभुवने ढोयंत हो॥प्रा०॥ अनुपम थाल विशाल, तेहमां भरीने सुरसाल हो ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ फलपूजा करे जे भावे, ते शिव-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रमणी सुख पावे हो ॥ प्रा० ॥ दुर्गता नारी जेम, लहे कीरयुगल वली तेम हो ॥ प्रा० ॥५॥काव्यं॥ अमलशांतिरसैकनिधिं शुचिं, गुण-फलैर्मलदोषहरैर्हरं ॥ परमशुद्धि-फलाय यजे जिनं, परहितं रहितं परभावतः ॥ १ ॥ इति सप्तम फल-पूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥अथाष्टम नैवेद्यपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥भवदव दहन निवारवा, जलद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घटा सम जेह ॥ जिनपूजा युगते करी, त्रिविधे कीजे तेह ॥ १ ॥ पूजा कुगतिनी अर्गला, पुण्य सरोवर पाल ॥ शिवगतिनी साहेलडी, आपे मंगल माल ॥ २ ॥ शुन्न नैवेद्य शुन्न नावशुं, जिन आगे धरे जेह ॥ सुर नर शिवपद सुख लहे, इलीय पुरुष परे तेह ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ श्रावण मासे स्वामी, मेहेली चाल्या रे ॥ ए देशी॥

॥ हवे नैवेद्य रसाल, प्रजुजी आगे रे ॥ धरतां नवि सुखकार, प्र-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्तुता जागे रे ॥ कंचन जमित ज-
दार, थालमां लावो रे ॥ तार तार
मुज तार, न्नावन न्नावो रे ॥ १ ॥
लापसी सेव कंसार, लाडु ताजा
रे ॥ मनोहर मोतिचूर,खुरमां खाजां
रे ॥ बरफी पेंडा खीर, घेवर घारी
रे ॥ साटा सांकली सार, पूरी
खारी रे ॥ २ ॥ कसमसीया कू-
लेर, सक्करपारा रे ॥ लाखणसाइ
रसाल, धरो मनोहारा रे ॥ मोतैया
कलिसार, आगे धरीए रे ॥ न्नव
न्नव संचित पाप, क्षणमां हरीए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ ३ ॥ मुरकी मेसुर दहींथरा,
वरसोलां रे ॥ पापरू पूरी खास,दोठां
घोलां रे ॥ गुंदवरूां ने रेवरूी, मन
भावे रे ॥ फेणी जलेबी मांहे, सरस
सोहावे रे ॥ ४ ॥ शालि दाल ने
सालणां, मन रंगे रे ॥ विविध जाति
पकवान, ढोवो चंगे रे ॥ ताल कं-
साल मृदंग, वीणा वाजे रे ॥ भेरी
नफेरी चंग, मधुर ध्वनि गाजे रे
सोल सजी शणगार,गोरी गावे रे ॥
देतां अढलक दान, जिनघर आवे
रे ॥ एणी परे अष्ट प्रकार, पूजा क-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रशे रे ॥ नृप हरिचंद्र परे तेह
नवजल तरशे रे ॥ ६ ॥ काव्यं ॥
सकलचेतनजीवितदायिनी, विमल
नक्तिविशुद्धिसमन्विता ॥ नगवत
स्तुतिसारसुखासिका, श्रमहरा म
हरास्तु विनोः पुरः ॥ इत्यष्टम नै
वेद्यपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नमो नवि
नावशुं ए ॥ ए देशी ॥

अष्टप्रकारी चित्त नावीए ए,
आणी हर्ष अपार ॥ नविजन से
वीए ए ॥ अष्ट महासिद्धि संपजे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए, अमबुद्धि दातार ॥ नवि० ॥१॥ अडदिठि पण पामीए ए, पूजथी नवि श्रीकार ॥ न० ॥ अनुक्रमे अष्ट करम हणी ए, पंचमी गति लहो सार ॥ न० ॥ २ ॥ शा न्हा-नासुत सुंदरु ए, विनयादिक गुण-वंत ॥ न० ॥ शाह जीवणना कहे-णथी ए, कीयो अभ्यास ए संत ॥ न० ॥ ३ ॥ सकल पंकित शिर सेहरो ए, श्रीविनीतविजय गुरुराय ॥ न० ॥ तास चरणसेवा थकी ए, देवनां वंछित थाय ॥ न० ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शशि नयन गज विधु वरु ए
(१४२१) नाम संवत्सर जाण ॥न
तृतीया सित आशो तणी ए, शुक
रवार प्रमाण ॥ न० ॥ ५ ॥ पादर
नगर विराजता ए, श्रीसंभव सुख
कार ॥ न० ॥ तास पसायथी ए
रची ए, पूजा अष्ट प्रकार॥न०॥६॥

॥ कलश ॥

॥ इह जगत् स्वामी मोहवामी,मो
क्षगामी सुखकरू ॥ प्रभु अकल
अमल अखंड निर्मल,नव्य मिथ्या
तम हरू ॥ देवाधिदेवा चरणसेवा,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नित्य मेवा .आपीए ॥ निज दास जाणी दया आणी, आप समोवड थापीए ॥ १ ॥ श्लोक ॥ इति जिनवरवृंदं, शुद्धभावेन कीर्ति–विमलमिह जगत्यां, पूजयंत्यष्टधा ये ॥ निजकलिमलहेतोः, कर्मणोंतं विधाय, परमगुणमयं ते, यांति मोक्षं हि वीराः ॥ १ ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

इति श्री देवविजयजीकृत अष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्री ज्ञानविमलसूरि-कृत श्रीशांतिनाथजीनो कलश प्रारंभः

॥ श्रीजयमंगलकृत्स्नमभ्युदय-
तावल्लीप्ररोहांबुदो, दारिद्र्यद्रुम-
काननैकदलने मत्तो धुरः सिंधुरः
॥ विश्वैः संस्तुतसत्प्रतापमहिमा
सौभाग्यभाग्योदयः, स श्रीशांति-
जिनेश्वरोऽभिमतदो जीयात् सुव-
र्णच्छविः ॥ १ ॥ अहो भव्याः श्रृणुत
तावत् सकलमंगलकेलिकलाली-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लासनकाः लीलारसरोपितचित्तवृ-
त्तयः विहितश्रीमज्जिनेंद्रभक्तिप्र-
वृत्तयः सांप्रतं श्रीमच्छांतिजिनेंद्र-
जन्माभिषेककलशो गीयते ॥

॥ राग वसंत, तथा नट्ट, देशाख ॥

श्रीशांति जिनवर, सयल सु-
खकर, कलश भणीए तास ॥ जिम
भविक जनने, सयल संपत्ति, ब-
हुत लील विलास ॥ कुरु नाभि-
जनपद, तिलक सम वरु, हस्ति-
णाउर सार ॥ जिननयरी कंचन,
रयण धण कण, सुगुणजन आधार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ तिहां राय राजे, बहु दि-
वाजे, विश्वसेन नरिंद ॥ निज
प्रकृति सोमह, तेज तपनह, मानुं
चंद दिणंद ॥ तस पण वखाणी,
पट्टराणी, नामे अचिरा नार ॥
सुखसेजे सुतां, चौद पेखे, सुपन
सार उदार ॥ २ ॥ सवठ सिऊ वि-
मानथी तव, चवीयो उर उप्पन्न ॥
बहु नट्ट नट नच्च कीण सत्तमी,
दिवस गुणसंपन्न ॥ तव रोग सोग
वियोग विडुर, मारी इति शमंत ॥
वर सयल मंगल, केवि कमला,घर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घरे विलसंत ॥ ३ ॥ वर चंद योगे, ज्येष्ठ तेरस, वदि दिने थयो जम्म ॥ तव मध्यरयणीए दिशिकुमारी, करे सूई कम्म ॥ तव चलिय आसन, सुणीय सवि हरि, घंटनादे मेली ॥ सुरविंदसन्हे, मेरुमन्हे, रचे मज्जन केली ॥४॥ ढाल ॥ विश्वसेन नृप घरे नंदन जनमीया ए ॥ तिहुअण नवियण प्रेमशुं प्रणमीया ए ॥ ५ ॥ चाल ॥ हां रे प्रणमीया ते चौसठ इंद्र, लेइ ठवे मेरुगिरींद ॥ सुरनदी नीर समीर तिहां, क्षीरजलनिधि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीर ॥ ६ ॥ सिंहासने सुरराज, जिहां मल्या देवसमाज ॥ सर्व औषधिनी जात, वर सरस कमल विख्यात ॥ ७ ॥ ढाल ॥ विख्यात विविध परे कमलना ए ॥ तिहां हरख नर सुरनि वरदामना ए ॥ ८ ॥ चाल ॥ हां रे वरदाम मागध नाम, जे तीर्थ उत्तम ठाम ॥ तेह तणी माटी सर्व, कर ग्रहे सर्व सुपर्व ॥ ९ ॥ बावनाचंदन सार, अनियोग सुर अधिकार ॥ मन धरी अधिक आनंद, अवलोकता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनचंद ॥ १० ॥ ढाल ॥ श्री जि-
नचंदने, सुरपति सवि नवरावता
ए ॥ निज निज जन्म सुकृतारथ
नावता ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ हां रे
नावता जन्म प्रमाण, अभिषेक
कलश मंडाण ॥ साठ लाख ने
एक क्रोड, शत दोय ने पंचास
जोड ॥ १२ ॥ आठ जातिना ते
होय, चौसठी सहसा जोय ॥ एणी
परे नक्ति उदार, करे पूजा विविध
प्रकार ॥१३॥ ढाल॥ विविध प्रकारना
करीय शिणगार ए ॥ नरीय जल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विमलना विपुल नृंगार ए ॥१४॥ चाल ॥ हां रे नृंगार थाल चंगेरी, सुप्रतिष्ठ प्रमुख सुनेरी ॥ सवि कलश परे मंमाण, जे विविध वस्तु प्रमाण ॥ १५ ॥ आरति ने मंगलदीप, जिनराजने समीप ॥ नगवती चूरणी मांही, अधिकार एह उत्साही ॥ १६ ॥ ढाल ॥ अधिक उत्साहशुं हरख जल नींजता ए, नव नव नांतिशुं नक्तिनर कीजता ए ॥ १७ ॥ चाल ॥ हां रे कीजता नाटारंन, गाजता गुहीर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मृदंग ॥ करी करी तिहां कंठताल, चउताल ताल कंसाल ॥ १८ ॥ शंख पणव शृंगल भेरी, झल्लरी वीणा नफेरी ॥ एक करे हयहेषा, एक करे गज लकार ॥ १९ ॥ ढाल ॥ गुलकार गर्जनारव करे ए ॥ पाय झूर झूर धुर धुर धरे ए ॥ २० ॥ चाल ॥ हां रे सुर धरे अधिक बहु मान, तिहां करे नव नव तान ॥ वर विविध जाति छंद, जिनभक्ति सुरतरुकंद ॥ २१ ॥ वली करे मंगल आठ, ए जंबूपन्नत्ति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ॥ थाय शुश्य मंगल एम, मन धरी अधिक बहु प्रेम ॥ २२ ॥ ढाल ॥ प्रेममद घोषणा पुण्यनी सुरासुर सहु ए ॥ समकित पोषणा शिष्ट संतोषणा एम बहु ए ॥ २३ ॥ चाल ॥ हां रे बहु प्रेमशुं सुख क्षेम, घरे आणीया निधि जेम ॥ बत्रीश कोडि सुवन्न, करे वृष्टि रयणनी धन्न ॥ २४ ॥ जिनजननी पासे मेली, करे अठाइमी केली ॥ नंदीश्वरे जिनगेह, करे महोत्सव ससनेह ॥ २५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल प्रथमनी ॥

॥ हवे राय महोत्सव करे रंग नर, थयो जब परनात ॥ सूर पूजीयो सुत, नयणे निरखी, हरखीयो तव तात ॥ वर धवल मंगल, गीत गातां, गंधर्व गावे रास ॥ बहु दाने माने, सुखीयां कीधां, सयल पूगी आश ॥ २६ ॥ तिहां पंचवरणी, कुसुमवासित, नूमिका संलित्त ॥ वर अगर कुंदरु, धूपधूपण, ठांट्यां कुंकुम लित्त ॥ शिर मुकुट मंरुल, काने कुंरुल, हैये नवसर हार ॥ एम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सयल भूषण भूषितांबर, जगत्जन परिवार ॥ २७ ॥ जिनजन्मकल्या-णक महोत्सवे, चौद भुवन उद्योत ॥ नारकी थावर, प्रमुख सुखीयां, सकल मंगल होत ॥ दुःख दुरित ईति, शमित सघलां, जिनराजने परताप ॥ तेणे हेते शांति कुमार थवीयुं, नाम इति आलाप ॥ २८ ॥ एम शांति जिननो, कलश भणतां, होवे मंगलमाल ॥ कल्याण कमला, केली करती, लहे लील विलास ॥ जिन स्नात्र करीए, सहेजे तरीए,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवसमुद्रनो पार ॥ एम ज्ञानवि-
मल, सूरींद जंपे, श्रीशांतिजिन
जयकार ॥ २९ ॥ इति श्रीज्ञा-
नविमलसूरिकृत श्रीशांतिजिनक-
लशः संपूर्णः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ कलशः ॥

श्रीसौराष्ट्र देश मध्ये, श्रीमंगलपुर मंडणो, दुरित विहंडणो, अनाथनाथ, अशरणशरण, त्रिभुवन जनमनरंजणो, त्रेवीशमो तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ तेह तणो कलश कहीशुं ॥ ढाल ॥ हां रे वाणारसी नयरी वसेय अनुपम, उपम अवदधार ॥ तिहां वावि सरोवर नदीय कूपजल, वनस्पति अढार ॥ तिहां गढ मढ मंदिर दीसे अतिनव, सुंदर पोलि प्राका-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

र ॥ कोसीसां पाखल फिरती खाइ, कोटे विसमा घाट ॥ १ ॥ हां रे जिनमंरुप शिखर बहुत प्रासादे, दंरु कलश ब्रह्मांरु ॥ अतिगिरुआ गुणसागर बहु सोहे, दिसे पुहवी प्रचंरु ॥ तिहां हाट चउटां वस्तु विवेकी, विवहारीया अनेक ॥ लखेसरी कोटी गढतल मंदिर, बोले वचन विवेक ॥ २ ॥ हां रे ते नगरी बहुरी व्यवहारी, घर घर मंगल चार ॥ नारीकरकंकण सुंदर झलके, करी सकल शणगार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ तिहां राजा अश्वसेन महीमं-
डल, दान खड्ग जीपंत ॥ अति
न्यायवंत दीसे नरनायक, वामा-
देवीकंत ॥ ३॥ हां रे सरगलोकथी
चवीय सुरवर, उप्पन्नो कुल जास
॥ तिहां कृष्ण चोथे चैत्र मासे,
एहवे अति उल्लास ॥ तिहां राणी
पश्चिम रयणी पेखे, सुहणां चउद
विशाल ॥ तस कुखे अवतरशे
जिनवर, जीवदया प्रतिपाल ॥ ४॥
॥ अथ सुपननी ढाल उलालानी ॥
॥ पहेले गयवर दीठो, मुज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुखकमल पइठो ॥ बीजे वृषन्न उदार, दीठो अति सुकुमार ॥५॥ त्रीजे सिंह संपूरो, मही मंगल-मांहे ए सुरो ॥ चोथे लखमी ए दीठी, रतन कमले ए बेठी ॥ ६ ॥ उर उतरती ए माल, कुसुमनी झाकझमाल ॥ छठे पूनम चंदो, अमीय झरे सुखकंदो ॥ ७ ॥ तेजे तपंतो ए नाण, करतो सफल वि-हाण ॥ ध्वजा उतरती आकाशे, लोडंती अंबरवासे ॥ ८ ॥ कणय-कलस शिरे करीयो, अमीय महा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रस भरीयो ॥ दशमे पद्मसरोवर, दीठो वामादेवी मनोहर ॥ ए ॥ खीरसमुद्र घरे आयो, मुज मन सयल सुहायो ॥ डंडी निज निज ठाम, आव्युं आव्युं अमर विमान ॥ १० ॥ पेखी पेखी रयणनी राशि, सग पण चढी आकाशि ॥ जलण जलंतो ए दखिण, जागी वामा-देवी तखिण ॥ ११ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ढाल ॥

॥ नवमे मासे आठमे दिवसे, जायो जिनवर रायो जी ॥ घर गूडी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तरियां तोरण लहेके, जिणमंदिर उहायो जी ॥ १ ॥ तत्क्षण उप्पन्न कुमरी आवे, वधावे जिणंदो जी ॥ दुस्तर कालमांहि ए जिनवर, प्रगट्यो पूनमचंदो जी ॥ २ ॥ उलाली वज्र सुर एम बोले, आसन कंपे इंदो जी ॥ तिहां जोइ अवधिनाणे तेणी वेला, अवतरीया जिणंदो जी ॥ ३ ॥ तेणे स्थानके जनममहोत्सव करवा, आवे चोसठ इंदो जी ॥ मेरुशिखर पर रत्नसिंहासन, बेठा पास जिणंदो जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४ ॥ तिहां हुउं सनाथ छत्र शिर सोहे, ढाले चामर सुरेंदो जी ॥ पहुता सुर मली प्रभुथानकवर, लब्धिपात्र जयवंतो जी ॥ ५ ॥ नवपल्लव जिन महिमासागर, आगर तणो भंडारो जी ॥ इरकागवंस तिहुयण मनरंजण, जिनशासन सिणगारो जी ॥ ६ ॥ भणे वब्रभंभारी अम मन, वसीयो श्रीअरिहंतो जी ॥ नीलवरण तनु महिमासागर, जयउ जयउ भगवंतो जी ॥७॥ इति श्रीपार्श्वनाथकलशः संपूर्णः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥ लूणउतारणं ॥

॥ लूण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जलधारा मन रंगे ॥ लू० ॥ १ ॥ जिम जिम तनुतरु लूणय फूटे, तिम तिम अशुभ कर्मबंध त्रूटे ॥ लू० ॥२॥ नयन सलूणां श्री जिनजीनां, अनुपम रूप दयारस भीनां ॥ लू० ॥ रूप सलूणुं जिन-जीनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ॥ लू० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिण देइ जलधारा, जलण खेपवीए लूण उदारा ॥ लू० ॥ ५ ॥ जे जिन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उपर डुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ॥लू०॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे ॥ लू० ॥ ७ ॥ इति लूणउतारणं ॥

॥ अथ आरतिः ॥

॥ विविध रत्न मणिजडित रचावो, थाल विशाल अनोपम लावो ॥ आरति उतारो प्रभुजीने आगे, भावना भावी शिवसुख मागे ॥ आ० ॥ १ ॥ सात चौद ने एकवीश भेवा, त्रण त्रण वार प्रद-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क्षिण देवा ॥ आ० ॥३॥ जिम जिम जलधारा देइ जंपे, तिम तिम दोहग थरहर कंपे ॥ आ० ॥ बहुभव संचित पाप पणासे, द्रव्यपूजाथी भाव उल्लासे ॥ आ० ॥४॥ चौद भुवनमां जिनजीने तोले, कोइ नहीं आरति एम बोले ॥आ०॥५॥इति आरतिः ॥

॥ अथ मंगलदीपकः ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, भुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद सूरज प्रभु तुम मुख केरां, लूछण करता दे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नित्य फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिम तुज आगल सुरनी अमरी, मंगलदीप करी दीए नमरी ॥ दी० ॥ ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम नवनां दुरित दज़ावे ॥ दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमांजलि चंदन, धूप दीप फल नैवेद्य वंदन ॥ दी० ॥ एणी परे अष्टप्रकारी कीजे, पूजा स्नात्र महोत्सव पन्नणीजे ॥ दी० ॥ ६ ॥ इति मंगलदीपकः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाहेर खबर.

सुक्त मुक्तावली जेमां १०२ जुदा जुदा वांचवालायक प्रबंधो छे ते सिवाय देवतत्त्व गुरुतत्त्व धर्मतत्त्व ज्ञानतत्त्व मनुष्यजन्म नीति न्याय विवेक आदि विषयोथी भरपूर अने वांचवालायक घणीज रसिक कथाओ सहित हमणांज छपाइ बहार पडी छे अने ते दरेक श्रावके मनन करवालायक छे. जैन साहित्यनुं रहस्य सरल समजावे छे.

मळवानुं ठेकाणुं.

श्रावक भीमसिंह माणेक. जैनपुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मांडवी, शाकगली. मुं.

Printed by R. Y. Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhimsi Maneck, Mandvi, Sackgalli Bombay.

Jain Education International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org